शास्त्रीय संगीत (ध्रुपद)
बी.ए. द्वितीय वर्ष – प्रथम प्रश्न–पत्र

इकाई १

टोन, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमिटोन, सेण्ट , अनुनाद , प्रतिध्वनि, तरंगमान, तरंगवेग, frequency , wavelength और उनका सम्बन्ध, ग्रंथि, प्रतिग्रंथी, स्वर सप्तक, स्वर अंतराल, tetrachord, प्रमुख संवादों का अध्ययन। स्केल, नेचुरल स्केल, डायटोनिक स्केल तथा टेम्पर्ड स्केल।

इकाई २

हिंदुस्तानी तथा कर्णाटक सप्तकों का तुलनात्मक अध्ययन। पूर्वांग, उत्तरांग राग और उनके कुछ उदाहरण। वादी संवादी स्वर से राग गायन के सम्बन्ध, संधि प्रकाश राग, परमेल प्रवेशक रागों की सामान्य जानकारी। राग के ग्रह अंश न्यास आदि दस लक्षण। आविर्भाव, तिरोभाव। ताल के दस प्राण। ध्रुपद में पखावज संगत और ख्याल गायन में तबला संगत की तुलनात्मक दृष्टि से संक्षिप्त विवरण।

इकाई ३

सदारंग, अदारंग, निर्मल शाह, बाबा बैराम खान, मोहम्मद वज़ीर खान, बन्दे अली खान बीनकार, विष्णुदिगम्बर पलुस्कर, विष्णुनारायण भातखंडे, अलाउद्दीन खान, नसीरुद्दीन खां , मोईनुद्दीन एवं अमीनुद्दीन डागर (बड़े डागर बंधु), यदु भट्ट , चन्दन चौबे, क्षितिपाल मल्लिक, रामचतुर मल्लिक का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

इकाई ४

वाद्यों के प्रकार (तंतवाद्य, घन वाद्य, शुशिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य इत्यादि) तथा वाद्यों का वर्गीकरण। ध्रुपद में प्रयोग आनेवाले मुख्य वाद्यों का जैसे रूद्र वीणा, तानपुरा, रबाब, सुरश्रिंगार पखावज का संक्षिप्त इतिहास।

इकाई ५

वीणा, सुरश्रिंगार, पखावज के विख्यात वादकों के नाम और संक्षिप्त जीवनी। ध्रुपद के बानी और ध्रुपद के विभिन्न घरानों/शैलिओं का संक्षिप्त परिचय।

Atish Samantha (?)
5/12/2018

शास्त्रीय संगीत (ध्रुपद)
बी.ए. द्वितीय वर्ष – द्वितीय प्रश्न–पत्र

इकाई १

निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय (अध्ययन) एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों में तुलनात्मक सामान्य अध्ययन– १) बागेश्री २)आसावरी ३) केदार ४) भैरवी ५) तोड़ी ६) गौड़सारंग ७) शंकरा ८) मुल्तानी। प्रत्येक राग में एक चौताल की ध्रुपद बंदिश/गत लिपिबद्ध करके लिखना(गायन की बंदिशों में से कम से कम चार बंदिशे चार तुक की हो)।

इकाई २

पाठ्यक्रम के किन्ही दो राग में धमार में बंदिश/गत (तंत वाद्य के विद्यार्थिओं के लिए) का लिपिबद्ध लेखन। पाठ्यक्रम के किन्ही दो राग में झपताल ध्रुपद बंदिश/गत का लिपिबद्ध लेखन (गायन की बंदिशों में से कम से कम एक चार तुक की हो)। पाठ्यक्रम के किन्ही दो राग में सूलताल की ध्रुपद बंदिश/गत (तंत वाद्य के विद्यार्थिओं के लिए) का लिपिबद्ध लेखन (गायन की बंदिशों में से कम से कम एक चार तुक की हो)। चौताल में टुकड़ा ठाह, दुगुन, चौगुन, डेढ़ी, तिगुन (पखावज के विद्यार्थिओं के लिए)।

इकाई ३

पाठ्यक्रम के २ रागों में संक्षिप्त औचारात्मक आलाप । २ रागों में विस्तृत प्रस्तार सरगम। ४ स्वरों से उत्पन्न २४ मेरुखण्ड तानों का लेखन/अभ्यास। धमार में दुगुन, चौगुन, तिगुन (पखावज के विद्यार्थिओं के लिए)। पाठ्यक्रम के किसी एक राग में मसीतखानी और रज़ाखानी गत का लिपिबद्ध लेखन (वादन के विद्यार्थी के लिए)। झपताल, तीनताल ठेका (पखावज के विद्यार्थिओं के लिए)।

इकाई ४

आदिताल, ब्रह्मताल, रुद्रताल, गणेषताल, झपताल, चौताल, धमार, रूपक, तीव्रा , सूलताल के ठेकों का ज्ञान एवं दुगुन, तिगुण, चौगुन का लिपिबद्ध लेखन ।

बोल, कृन्तन, जोड़, झाला, तारपरन की परिभाषा। चौताल एवं धमार में पखावज के परन का लेखन।

Ashit Samanta
5/12/2018

इकाई ५

ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, क़व्वाली का परिचय। पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर की स्वरलिपि का अध्ययन।

संगीत सम्बन्धी विषय पर लगभग ४०० शब्दों में निबंध लेखन।

5/12/2018